

डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 8, एक शाश्वत साम्राज्य

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 8 है, एक शाश्वत साम्राज्य।

हमने इतिहासकार की कहानी को इस बात की पुष्टि के साथ समाप्त किया कि परमेश्वर की योजना थी कि दाऊद पूरे इस्राएल का राजा बने।

वह जनजातियों के बीच होने वाले सभी संघर्षों से भली-भाँति परिचित है, लेकिन वे चीज़ें ईश्वर की योजना का हिस्सा नहीं थीं। वे सभी चीज़ें इतिहास के उस तरीके का हिस्सा थीं, जिसमें उसकी सारी कुरूपताएँ काम करती हैं। आपको इतिहास के विवरणों और उसकी कुछ कुरूपताओं, युद्धों और बाकी सब चीज़ों से परे देखना होगा कि ईश्वर की योजना इन सबसे परे क्या है और ईश्वर इस योजना को कैसे कार्यान्वित करता है।

और इसलिए, इतिहासकार अब पूरी तरह से और स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करने में रुचि रखता है कि यह दाऊद का राज्य नहीं है, बल्कि यह एक शाश्वत राज्य है। इतिहासकार के अनुसार, यह सन्दूक के बारे में बात करके दाऊद के शासनकाल में तुरंत स्पष्ट हो जाता है। अब शमूएल की कहानी में, सन्दूक को 20 साल तक केरियथ-यारीम में छोड़ दिया गया था क्योंकि इसे पलिशितियों ने कब्जा कर लिया था।

पलिशितियों ने पाया कि उनके लिए परमेश्वर के सन्दूक को अपनी उपस्थिति में रखना बहुत स्वास्थ्यकर नहीं था, और इसलिए वे इसे बाहर निकालना चाहते थे। वे इसे यहूदा के गोत्र के सबसे पश्चिमी क्षेत्र तक ले गए, उस समय यहूदा का क्षेत्र, जो कि केरियथ-यारीम है, जो यरूशलेम के पश्चिम में है, और वहीं यह रह गया। अब, यह वह पूजा नहीं है जिसका सन्दूक प्रतिनिधित्व करता है।

यह वह सन्दूक नहीं है जहाँ वाचा की पटियाँ रखी हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा बाँधी है और यह वास्तव में परमेश्वर के सिंहासन का पादपीठ है, जैसा कि भजन 132 में कहा गया है, एक भजन जिसका इतिहासकार इस सन्दूक के महत्व को स्थापित करने के संदर्भ में उल्लेख करने जा रहा है। इसलिए, दाऊद का तत्काल कार्य यरूशलेम में इस सन्दूक के लिए एक स्थान तैयार करना और सन्दूक को वहाँ लाना है। हालाँकि, कहानी और कहानी में यह भी शामिल है कि जिस तरह से दाऊद ने सन्दूक को स्थानांतरित करने का प्रयास किया वह उस प्रोटोकॉल के अनुसार बिल्कुल भी नहीं था जिसे उसे टोरा में परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देशों से पता होना चाहिए था।

अर्थात्, सन्दूक को हमेशा उन चार डंडों द्वारा ले जाया जाना चाहिए जो इस बक्से से स्थायी रूप से जुड़े हुए हैं और इसे कभी भी किसी अन्य तरीके से नहीं ले जाया जाना चाहिए। इसलिए दाऊद

ने जो किया है वह यह है कि इस सन्दूक को एक गाड़ी, किसी प्रकार की बैलगाड़ी पर रखा है, और वह इसे यरूशलेम ले जा रहा है। अब, यहाँ फिर से एक पसंदीदा शब्द है जिसका इतिहासकार यहाँ उपयोग करता है, और मैं इसे यहाँ लिखने जा रहा हूँ।

यह शब्द पराश है, जिसका अर्थ कुछ इस तरह है कि बाहर निकलना, लेकिन बाहर निकलने के अर्थ में इसके कई अर्थ हैं। उनमें से एक अर्थ यह है कि लोग अपनी संख्या, अपनी शक्ति और अपनी वफ़ादारी के मामले में किस तरह से बाहर निकल सकते हैं। और इसलिए इस अध्याय की शुरुआत में इसका इस्तेमाल इसी तरह किया गया है।

लोगों ने दाऊद के समर्थन में जोरदार आवाज़ लगाई। हाँ, हमें सन्दूक को यरूशलेम लाना चाहिए, लेकिन सन्दूक को अनुचित तरीके से ले जाने की प्रक्रिया में, गाड़ी अस्थिर हो जाती है और सन्दूक गिर सकता है। और इसलिए उज्जा नाम का एक पुजारी सन्दूक को स्थिर करने के लिए अपना हाथ बढ़ाता है, और भगवान, पराश, जोर से चिल्लाते हैं।

कुछ महीने पहले, मैं मैकमास्टर यूनिवर्सिटी में एक बहस में शामिल था, जिसे वास्तव में मुसलमानों द्वारा प्रायोजित किया गया था, जिसमें वे अहमदिया धर्म और इमाम को शामिल करना चाहते थे, जिसे उन्होंने टोरंटो से लाया था। लेकिन ऐसा करने के लिए, वे एक ईसाई को ईसाई दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने के लिए चाहते थे, और वे नास्तिक या मानवतावादी को मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने के लिए चाहते थे, और वे एक मुस्लिम प्रस्तुति चाहते थे। तो, इस पैनल में हम चार लोग थे।

बेशक, छात्रों की यह अविश्वसनीय उपस्थिति थी। मेरा मतलब है, उनके पास मैकमास्टर यूनिवर्सिटी में सबसे बड़ी कक्षाओं और सभागारों में से एक था। सीढ़ियों से ऊपर तक कम से कम 200 लोग रहे होंगे, और वे सभी गलियारे में बैठे थे।

यह कोरोना से पहले की बात है जब आप गलियारे में बैठ सकते थे और एक दूसरे के करीब बैठ सकते थे। वे जितना व्यापक स्पेक्ट्रम हो सकता था, उतना प्रतिनिधित्व करते थे। मुझे लगता है कि पूरी बहस का सबसे दिलचस्प हिस्सा तब था जब मुसलमानों ने टोरा की बैठक पर मुसलमानों के साथ बहस की।

यह इतनी जल्दी इतना गरमा गया कि संचालक को इसे बंद करने के लिए वास्तव में तुरन्त कार्रवाई करनी पड़ी। लेकिन इसका एक और हिस्सा यह था कि जब मैं उनसे बात कर रहा था, तो मेरे बाईं ओर लोगों का एक पूरा गिरोह था, जो बाइबल का उपहास करने के लिए वहाँ आया था। अब, मैं बाइबल के बारे में उनकी धारणाओं का बचाव करने की कोशिश करने के लिए वहाँ नहीं गया था, लेकिन जो अंश पढ़ा गया था, उनमें से एक उज्जा और भगवान द्वारा उसे मार डालने के बारे में था क्योंकि उसने सन्दूक को छुआ था।

और इस व्यक्ति का कहना था कि कोई ऐसे ईश्वर की सेवा क्यों करना चाहेगा? खैर, बेशक, यह पवित्रता की हिब्रू अवधारणा के बारे में पूरी तरह से अज्ञानता है। यह इस बारे में पूरी तरह से अज्ञानता है कि जब हिब्रू लोग ईश्वर कहते हैं तो उनका क्या मतलब होता है, जिसके बारे में मैं

बात कर रहा था। मेरा कहना यह था कि जब आप ईश्वर कहते हैं, तो आपको पता नहीं होता कि आपका क्या मतलब है।

जब हम ईश्वर कहते हैं, तो हम जानते हैं कि हमारा क्या मतलब है। और हमारा मतलब है कि ईश्वर पवित्र है, जिसका अर्थ है कि वह सृजित ब्रह्मांड से बाहर है। और इसलिए, जो उसका प्रतिनिधित्व करता है वह केवल सृजित ब्रह्मांड से संबंधित नहीं है।

यह पवित्र है। इसलिए, आपको नियमों के अनुसार इसका सम्मान करना चाहिए क्योंकि यह पूरी दुनिया के भीतर एक और बॉक्स से कहीं ज्यादा कुछ दर्शाता है। मैंने इस ताना मारने वाले को इसके बारे में ज्यादा कुछ समझाने की कोशिश नहीं की।

मैंने बस इतना कहा, आप जानते हैं, अंश हमेशा वैसा नहीं लगते, हमेशा वैसा नहीं होता जैसा कि उनका मतलब लगता है। और मुझे लगता है कि आपको घर जाकर अपना होमवर्क करना चाहिए। जिस पर मुझे बहुत ही मिश्रित जवाब मिले: कुछ लोग समर्थन कर रहे थे और कुछ लोग मेरा उपहास करना चाहते थे।

लेकिन किसी भी मामले में, पूरी बात काफी अच्छी तरह से सामने आई क्योंकि अंत में उन्हें एहसास हुआ कि, ओह, जब आप ईश्वर के बारे में बात करते हैं, तो आप किसी अमूर्त शक्ति के बारे में बात नहीं कर रहे होते हैं। आप वास्तव में किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहे होते हैं जिसने खुद को पवित्र के रूप में प्रकट किया है। खैर, यही सब कुछ है।

और इसलिए, डेविड के लिए, यह एक चौंकाने वाली याद दिलाता है कि आम दुनिया में भगवान का प्रतिनिधित्व करने वाली चीजों के साथ कभी भी छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। और नियमों का हमेशा पालन किया जाना चाहिए। और डेविड अब भयभीत है क्योंकि भगवान भड़क सकते हैं, पलाश, ठीक उसी तरह जब हम एक बहुत अच्छे कारण के लिए सन्दूक को आगे बढ़ा रहे हैं, लेकिन हम उसका सम्मान उस तरह से नहीं करते हैं जिस तरह से उसका सम्मान किया जाना चाहिए।

तो, यह निश्चित रूप से, यरूशलेम में सन्दूक के पहुँचने की पूरी प्रक्रिया और प्रक्रिया को बाधित करता है, जिस बिंदु पर इतिहासकार यरूशलेम के बारे में थोड़ा और बताने के लिए आगे बढ़ता है। वहाँ सन्दूक ले जाने के लिए दाऊद ने क्या तैयारी की है? और दाऊद वास्तव में यरूशलेम में परमेश्वर की आराधना कैसे स्थापित कर रहा है? तो, इतिहासकार फिर, इस अगले अध्याय में, यरूशलेम में शाही परिवार के बारे में बात करता है, मंदिर के निर्माण के संदर्भ में दाऊद के समर्थन के बारे में बात करता है। तो, वह यहाँ सोर के राजा हीराम के समर्थन को लाता है।

फिर, वह यरूशलेम में दाऊद के परिवार और वहाँ उसके द्वारा पैदा हुए बच्चों का विवरण देता है। फिर वह उस घटना के बारे में बात करता है जिसका उसने पहले उल्लेख किया था, जो कि रपाईम की घाटी में पलिशियों का आक्रमण था, जो यरूशलेम के दक्षिण में है और यह कहानी बताता है कि दाऊद कैसे वफ़ादार था। शाऊल के विपरीत, उसने सलाह ली।

उसने यहोवा से सलाह ली। उसने परमेश्वर से सलाह ली। और उसने परमेश्वर से पूछा, मैं पलिशियों के सम्बन्ध में क्या करूँ? और मैं कब आक्रमण करूँ? और उसे परमेश्वर से निर्देश मिला।

इसलिए, दाऊद के लिए परिणाम शाऊल के लिए पलिशियों के खिलाफ युद्ध में जो हुआ उससे बिलकुल अलग है। फिर, इतिहासकार इस सन्दूक को यरूशलेम लाने के लिए वापस आता है। तो यहाँ हम देखते हैं कि दाऊद ने चीजें उसी तरह से कीं जिस तरह से उन्हें किया जाना चाहिए।

तो, अध्याय 15 में बताया गया है कि दाऊद ने लेवियों को कैसे संगठित किया। उसने मंदिर के सभी कर्मचारियों को इस तरह संगठित किया कि सही अधिकृत लोग निर्धारित तरीके से सन्दूक को ले जा सकें। इसलिए, पलाश की कोई ज़रूरत नहीं है।

भगवान को बाहर निकलने की कोई ज़रूरत नहीं है। उन्हें बस भगवान के प्रतीकों को अनुमति देने की ज़रूरत है, जो कि इज़राइल के पवित्र व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस प्रतिनिधित्व में सशक्त होने की ताकि यह स्पष्ट हो सके कि ये सिर्फ दूसरी चीज़ें नहीं हैं। ये पवित्र हैं और ये हमें भगवान के बारे में बताते हैं।

तो, फिर हमारे पास वह पूरा उत्सव जुलूस है जिसे दाऊद ने सन्दूक स्थापित करने के लिए लाया था। और, बेशक, इस समय, वह केवल उस तम्बू में सन्दूक स्थापित कर रहा है जिसे उसने यरूशलेम में इसके लिए तैयार किया था। और हम जो पता लगाने जा रहे हैं वह यह है कि तम्बू अभी भी गिबोन में ही था।

लेकिन सन्दूक गिबोन में तम्बू का हिस्सा नहीं था। दाऊद सन्दूक को यरूशलेम ले जा रहा है, और उसने वहाँ एक तम्बू बनाया है, जो यरूशलेम में सन्दूक के लिए एक जगह है। तो, वास्तव में, अब पूजा का दोहरा स्थान है और सुरक्षा कर्मियों और लेवियों का दोहरा विभाग है, एक यरूशलेम में सन्दूक के चारों ओर और दूसरा गिबोन में।

अब, यहाँ हम उस बात पर आते हैं जो इतिहासकार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है: संगीत और भजनों का उपयोग। अब, मुझे नहीं पता कि इतिहासकार को पता था कि दाऊद ने विशेष रूप से इन गीतों और इन भजनों का उपयोग सन्दूक की स्थापना के संदर्भ में किया था। इतिहासकार जो कर रहा था वह भजन संहिता से भजन चुनना था, वे चीज़ें जो उन्होंने मंदिर के चारों ओर गाईं, जो उन्हें बताती थीं, जो यह स्वीकार करती थीं कि परमेश्वर कौन है, इस्राएल का पवित्र कौन है।

ये वो भजन हैं जिन्हें आप फिर से पढ़ना चाहेंगे। मैं भजन 105-106 पढ़ाता था क्योंकि वे समानांतर भजन हैं, उनमें से एक में परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साथ की गई वाचा के वादे के बारे में बात की गई है और दूसरे में उन सभी न्यायों के बारे में बात की गई है जो वाचा के संबंध में उनकी अवज्ञा के कारण इस्राएल पर आए थे। वे एक दूसरे से संबंधित हैं।

खैर, भजनकार भजन 105 से शुरू करता है, और भजन 105 में, हमारे पास एकमात्र समय है जब वह वास्तव में याकूब नाम का उपयोग करता है क्योंकि यह भजन का हिस्सा है। परमेश्वर ने एक बेरेट बनाया, उसने अब्राहम के साथ एक वाचा बनाई, और उसने याकूब के साथ एक वाचा

बनाई, और यह भजन में उस बिंदु पर है कि इतिहासकार ने भजन के सभी छंदों का उद्धरण दिया है। और फिर वह इस प्रशंसा में टूट जाता है, जो भजन का इतना हिस्सा है, अर्थात् यह कहने के लिए कि परमेश्वर जिसने अब्राहम के साथ यह वाचा बनाई थी, वह एक वाचा बना रहा था कि दुनिया के सभी राष्ट्र धन्य होंगे।

इसमें पक्षपात जैसा कुछ नहीं है। यह दुनिया का केंद्र है और भले ही यह ऐसा न लगे, लेकिन यहाँ जो हो रहा है उसे कभी भी गलत न समझें। यह सार्वभौमिक राज्य है और इसलिए हम भजन 96 और भजन 98 को जानते हैं जिन्हें हम कभी-कभी सिंहासनारूढ़ गीत कहते हैं।

प्रभु को राज्य करने दो या प्रभु राज्य करते हैं और फिर हमारे पास इस गीत के कई भाग हैं, जो हमें बताते हैं कि किस तरह से परमेश्वर अपने शासन में मौजूद है और किस तरह से वह अपना न्याय करता है और पूरी पृथ्वी पर अपना शासन करता है। इतिहासकार हमें यही बताना चाहते हैं: परमेश्वर का सार्वभौमिक शासन। यह सभी राष्ट्र हैं, और सभी राष्ट्र आकर झुकेंगे।

फिर वह भजन 106 पर वापस आता है, लेकिन इस स्वीकारोक्ति के भजन से केवल अंतिम छंदों का उपयोग करता है, ताकि उन लोगों पर प्रभु के आशीर्वाद के बारे में बात की जा सके जो उसे खोजते हैं। यह वास्तव में वह बिंदु है जिसे वह स्पष्ट करना चाहता था। ऐसा नहीं है कि इस्राएल या दाऊद कभी असफल नहीं हुए, लेकिन राज्य उनका होगा क्योंकि वे ही वे लोग हैं जो वफ़ादार हैं, और वे ही वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर सम्मान और आशीर्वाद देने जा रहा है।

यह हमें नातान के दाऊद के पास आने के बहुत ही प्रसिद्ध अंश पर ले आता है। हम जानते हैं कि शमूएल में, दाऊद अब अपने सिंहासन पर है, और वह कहता है, मुझे शांति मिली है। मुझे चारों ओर के शत्रुओं से विश्राम मिला है। विश्राम शब्द एक ऐसा शब्द है जो यहोशू से आया है।

इसका मतलब है कि परमेश्वर ने अपना उद्धार कर दिया है। उसने अपना उद्धार कर दिया है, और अब उन्हें आराम मिल गया है। वे परमेश्वर के राज्य में हैं, और इसलिए दाऊद कहता है, मैं यहाँ एक महल में हूँ, और परमेश्वर का सन्दूक एक तम्बू में रहता है।

मैं भगवान के लिए एक घर बनाने जा रहा हूँ। और नाथन कहता है कि तुम्हें ऐसा करना चाहिए, लेकिन फिर नाथन को भगवान से एक संदेश मिलता है, और भगवान नाथन से कहते हैं, तुमने यह सब उल्टा समझ लिया है। डेविड मेरे लिए घर नहीं बना रहा है।

मैं दाऊद के लिए एक घर बना रहा हूँ। अब, यहाँ घर शब्द पर थोड़ा सा खेल है, और हम इसे भजन 127, 1 और 2 में देखते हैं। एक भजन जिसे हम में से बहुत से लोग बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, तीर्थयात्रियों के गीतों का एक हिस्सा जिसमें, अगर प्रभु घर की रक्षा नहीं करते, तो पहरेदार व्यर्थ में देखता है, अगर प्रभु लोगों या शहर का निर्माण नहीं करते, तो रक्षक व्यर्थ में देखते हैं। अब, घर शब्द पर खेल में, कोई इमारत नहीं है; शहर शब्द पर खेल एक भौतिक संरचना नहीं है।

इसमें परिवार के बारे में भी बात की गई है। वह व्यक्ति धन्य है जिसका परिवार भरा हुआ है। दूसरे शब्दों में, घर का मतलब है लोग।

शहर लोग हैं और परमेश्वर दाऊद के लिए जो घर बना रहा है वह लोग हैं। यह वे लोग हैं जो इस वादे का हिस्सा बनने जा रहे हैं। इसलिए, दाऊद को अब इस भविष्यवाणी के संदेश के माध्यम से एहसास होता है कि उसका राज्य अनंत है और वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो परमेश्वर के लोग हैं और वे ऐसे लोग हैं जो हमेशा के लिए रहेंगे।

तो, हमारे पास दाऊद का जवाब है। यह विनम्रता की प्रतिक्रिया है। दाऊद कहता है, प्रभु, कोई कारण नहीं है कि मैं आपके दिल के अनुसार आदमी बनूँ।

मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो मुझे इस योग्य बनाता हो कि आपने मुझे चुना। फिर वह इज़राइल के बारे में बात करता है। वह कहता है, आप जानते हैं, यह सभी देशों में सबसे छोटा है।

वे इस दुनिया में किसी भी तरह का महत्व रखने के सबसे कम योग्य हैं, लेकिन आपने उन्हें चुना है। फिर, डेविड पुष्टि करता है कि इतिहासकार जो हम सभी को बताना चाहता है वह सच है। यह ईश्वर का राज्य है।

और इसलिए, ये लोग जो यहाँ इकट्ठे हुए हैं, वे ही उस एकमात्र राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जो वास्तव में मायने रखता है। और यह प्रक्रिया शुरू हो गई है क्योंकि अब संदूक यरूशलेम में रखा गया है, वह स्थान जिसे परमेश्वर ने अपने नाम के निवास के लिए चुना था। और यहीं पर लोग परमेश्वर की आराधना करने और उसका राज्य बनने के लिए एकत्रित होने जा रहे हैं।

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 8 है, एक शाश्वत साम्राज्य।